जिक्र होता है जब क्यामत का,आखिरी इमाम की बात होती है
मेरी आतम के हैं वो धाम धनी,उनसे अंगना की बात होती है

1-सोई साईत सोई पल सोई घड़ी,
हम समझते हैं सदियां बीती हैं
रोज नजरों से उनकी पीते थे,आज वाणी का जाम पीती हैं
जानकर तुमने अर्श की निसवत,मेहर रूहों पे खास होती है

2- माया के तन वो ले के बैठे हैं,
बातें करते हैं हमसे खिलवत की
मैं खुदी को मिटायेंगे मोमिन,हुई पहचान अपने प्रीतम की
देखने को उनका तन है यहां,सुरता अक्षर के पार होती है

3- मैं हूँ तेरी धनी तुम हो मेरे,
तुझको पाकर और तुझसे मांगू क्या
मांग भर दी तुम्हीं ने जब मेरी,अब सुहागिन हूं और चाहूं क्या
इश्क की लज्जत जब मिली रूह को,श्यामश्यामा से बात होती है

Nijanand App